आमेर रियासत के शेखावाटी से सम्बन्ध

डॉ. सोमेश कुमार सिंह
व्याख्याता – इतिहास
राजकीय महाविद्यालय देवली टोंक
राजस्थान

भारत के इतिहास में राजस्थान का महत्वपूर्ण स्थान है। देश के गौरवपूर्ण इतिहास के निर्माण में राजस्थान की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। प्राचीन काल में यहां के लिए कोई विशेष नाम हमे नहीं मिलता। राजस्थान में मौजूद विभिन्न क्षेत्रों को पृथक पृथक नामों से पुकारा जाता था। जैसे प्राचीन भारत में जयपुर का राज्य मत्स्य प्रदेश का भाग था। इसका दक्षिणी भाग चौहान शासकों के पास था। जिसे सपादलक्ष कहा जाता था।[1] इसी कारण चौहान शासकों को सपादलक्षीय नृपति भी कहते थे। बीकानेर व जोधपुर के जिले महाभारत काल में जांगल प्रदेश कहे जाते थे। कभी कभी इनका नाम कुरू जांगल तथा भ्राद्रेय जांगल भी लिखा मिलता है।[2] सम्भवतः कुरू व मरू प्रदेशों के पडौसी होने के कारण उन्हें यह नाम दिया गया होगा। इसकी राजधानी नागौर थी जिसके प्राचीन समय में अहिच्छपुर कहा जाता था। राजस्थान के लिए कोई विशेष शब्द हमें प्राप्त[3] नहीं होता। कर्नल टाड ने इसे रजवाड़ा या रायथान कहा है।

इसी रायथान का एक महत्वपूर्ण प्रदेश शेखावाटी रहा है। यह क्षेत्र अपनी आन बान शान के लिए समूचे भारत में प्रसिद्ध था। साहित्य कला संस्कृति, शिक्षा से ओत प्रोत यह क्षेत्र हमेशा से शूरवीरों व दानवीरों का ही प्रदेश रहा है। जहां यह प्रदेश धन कुबेरों की भूमि रहा है वही मातृभूमि की रक्षा के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने वाले वीर सैनिक भी यहां कम नही है। इस प्रदेश का इतिहास भी भारतीय इतिहास के साथ ही प्रारम्भ होता है।

राजस्थान के मानचित्र में शेखावाटी का महत्वपूर्ण स्थान है। स्वतन्त्रता से पूर्व यह भूतपूर्व जयपुर रियासत का भाग था। जयपुर राज्य के इतिहास के अध्ययन से ज्ञात होता है कि प्राचीन काल में जयपुर का सीमा विस्तार बसवा, आमेर व दौसा तक ही सीमित था परन्तु धीरे धीरे इसका विस्तार चारों तरफ होने लगा। जयपुर रियासत का शेखावाटी प्रदेश चुरू, लुहारन तथा जयपुर तक विस्तृत था। पूर्वकाल में शेखावाटी के पश्चिम में बीकानेर, उत्तर व उत्तरपूर्व में लुहारू एवं पंजाब का पटियाला, दक्षिण में सांभर तथा जयपुर, उत्तर पश्चिम में बीकानेर, एवं दक्षिण पश्चिम जोधपुर, पूर्व में अलवर, तथा भरतपुर के भू भाग पड़ते थे।[4] उत्तर पूर्व से दक्षिण पश्चिम तक इसकी लम्बाई 95 मील और विपरीत कोण में इसकी चौड़ाई 63 मील मानी जाती है।[5] कर्नल टॉड ने शेखावाटी का क्षेत्रफल 10000 वर्ग मील बताया है।[6] मधुसुदन ओझा शेखावाटी का विस्तार 3580 वर्गमील मानते है।[7] वही पं. रामचन्द्र शास्त्री उसका सीमा विस्तार 5400 वर्गमील स्वीकार करते है।[8] उन सभी विवादों के बीच अगर हम वर्तमान झुन्झुन व सीकर जिलो को ही शेखावाटी के अन्तर्गत माने तो इसका विस्तार 13784 वर्ग किलोमीटर बैठता हैं। परन्त ये सीमा राजनीतिक सीमाएं है। सांस्कृतिक दृष्टि से शेखावाटी का प्रभाव सीकर झुन्झुन के अतिरिक्त अन्य कई क्षेत्रों तक विस्तृत था।

पश्चिमी इतिहासकारों ने शेखावाटी की तुलना स्काटलैण्ड से की है।[9] कर्नल जे.सी. बुक ने अपनी पुस्तक में यहां के लोगो के लिए लिखा है कि समस्त भारत में अश्वसेना की भर्ती के लिए शेखावाटी से उपर्युक्त कोई क्षेत्र कहीं नहीं है।[10]

वीर भूमि शेखावाटी प्रदेश की स्थापना राव शेखा के वंशजों के पराक्रम का फल था। शेखावतों के आदि पुरूष राव शेखा का जन्म ई0स01433 में माना जाता है। इतिहास में राव शेखा के पिता का नाम भौकल मिलता है जिन्हें शेख बुरहान के आर्शीवाद से पुत्र प्राप्त हुआ था।[11] 12 वर्ष की उम्र में ही राव शेखा को पितृ स्नेह से वंचित होना पड़ा 1445 ई0 में राव शेखा अमरसर की गद्दी पर बैठे। [12]आमेर नरेश उदयकरण ने उन्हें महाराव की पदवी से विभूषित किया। [13]

शेखाजी से पूर्व एक परम्परा थी कि शासक को आमेर के मुख्य शासक को उपहार स्वरूप घोड़े भेजने पड़ते थे। राव शेखा ने इस कर को भेजना बन्द कर दिया। यह केन्द्रीय सत्ता के लिए खुली चुनौती थी। अतः आमेर नरेश चन्द्रसेन की राव शेखा से कई लडाइयां हुई। अन्तिम लडाई कूकस के तट पर हुई जिसमें दोनो पक्षों के मध्य समझौता हो गया । राव शेखा की स्वतंत्र सत्ता स्वीकार की गई। जिन गांवों पर राव शेखा ने अधिकार कर रखा था वे उन्हीं के अधिकार में रहने दिए गए।

अपनी स्थिति सुदृढ़ बनाने के बाद रावशेखा ने अपने राज्य का विस्तार प्रारम्भ किया उन्होने दादरी के पास जाटू तंवर का दमन किया। हिसार के आसपास के क्षेत्र पर अलफखां बांगडी का अधिकार था। राव शेखा ने उन्हें भी पराजित किया। राव शेखा ने गोडों के साथ 11 युद्धों में सफलता प्राप्त की। [14] शेखाजी का राज्य झांसी, भिवानी दादरी तक फैला हुआ था। [15] यद्यपि इस कथन पर विश्वास नहीं सकता किन्तु इतना सच है कि एक विशाल साम्राज्य की स्थापना राव शेखा ने की थी।

आक्रमण और विजय से जो धन प्राप्त हुआ राव शेखा ने उससे अमरसर में शिखरगढ़ नामक सुदृढ़ दुर्ग बनवाया। शेखावाटी प्रकाश के अनुसार इस दुर्ग का निर्माण वि0स0 1534 में हुआ था।[16] शीघ्र ही 360 गांवों पर अधिकार करके एक सुदृढ़ शासन की नीवं डाली गई। इस तरह राव शेखा शेखावतों के जनक थे। राव शेखा का परिवार काफी बड़ा था। उनके 5 रानियां तथा 12 पुत्र थे। राव शेखा ने अपने कनिष्ठ पुत्र रायमल को अपना उत्तराधिकारी बनाया।

रायमल ने बूंदी व जोधपुर के शासकों को पराजित किया तथा गौड़ों से मैत्री स्थापित की । 1537 मे रायमल की मृत्यु हो गई।

समकालीन स्त्रोतों में रायमल के बारे में कई महत्वपूर्ण तथ्य सामने आते है। उन्होनें कई युद्धों में वीरतापूर्वक भाग लिया था। केसरी सिंह समर के अनुसार रायमल ने हिन्दाल को पराजित किया था। यह हिन्दाल कौन था? इस बारे में काफी मतभेद है। शार्दुल प्रकाश के लेखक ने हिन्दाल को हुमाऊ का भाई बताया है किन्तु रतनलाल मिश्र हिन्दाल को हिसार भिवानी का एक मनसवदार बताते है जिसे हुमायुं ने नियुक्त था। [17] कुछ इतिहासकारों की मान्यता है कि रायमल ने खानवा ने युद्ध में महाराणा सांगा की ओर से युद्ध में भाग लिया था।

रायमल के सात रानिया थी जिनसे सात पुत्र पैदा हुए। [18] रायमल की मृत्यु के बाद उसका बड़ा पुत्र सूजा गद्दी पर बैठा था। प्रचलित मान्यताओं के अनुसार रायमल के शासन काल तक 455 गॉवों पर शेखावतों का अधिकार हो चुका था।[19] धीरे धीरे शेखावतों का प्रभाव वर्तमान में विशुद्ध शेखावाटी भू–भाग की ओर बढता जा रहा था।

सूजा की मृत्यु के बाद लूणकरण अमरसर का शासक बना। लूणकरण के छोटे भाई रायमल को लाम्या गांव की जागीर मिली। इसी रायमल के समय में शेखावाटी के कुछ अन्य प्रदेश पर शेखावतों का अधिकार हुआ। रायसल शेखावाटी के प्रबल सरदारों में माना जाता है। उन्होने अकबर की अधीनता स्वीकार की थी तथा भडौच, जूनागढ़, पाटन, भटनेर, गागरोन के युद्धों में भाग लिया था। उन्होने तोरावटी प्रदेश के तंवरों को पराजित करके उन्हें पहाडों में छुपने को बाध्य किया।[20] आइने अकबरी से ज्ञात होता है कि अकबर ने उसे 2500 का मन सबदार बनाया था। तुजुके जहांगीरी के अनुसार जहांगीर ने उसका मनसब बढ़ाकर 3000 कर दिया था।[21] रायसल का मुगल दरबार मे अति सम्मान जनक स्थान था। महाराणा अमरसिंह के विरूद्ध जो सेना मेवाड भेजी गई थी उसमें रायसल को भी शामिल किया गया था।[22] शेखावतों के इस शक्तिशाली नेता की न तो जन्मतिथि का ही ज्ञान है और न ही मृत्यु का। प0 हरप्रसाद शास्त्री के अनुसार रायसल खैबर दर्रे की लडाई में मारे गये थे[23] वही आइने अकबरी के अनुसार रायमल की स्वाभाविक मृत्यु हुई थी। रायमल के 6 रानीया व 12 पुत्र थे।[24]

16वीं शताब्दी के बाद मुगलों का शासन इस देश पर सुव्यवस्थित होने लगा। चूंकि मुगल पूरे देश को अपनी सम्पति मानकर चलते थे अतः उन्होने यहां के स्थानीय शासकों से यह अपेक्षा की कि वे उनकी अधीनता स्वीकार करलें। तथा उन्हें वार्षिक खिराज दें यहां के बहुत से शासकों ने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली किन्तु कुछ विद्रोही बनकर मारे गए।

शेखावतों के इतिहास में रायसल का महत्वपूर्ण स्थान है। रायसल को बंटवारें में मात्र लाग्या गॉव व 25 घोडे ही मिले थे, किन्तु अपनी योग्यता तथा वीरता से रायसल उन्नति करते गए एवं शेखावाटी के महत्वपूर्ण स्तम्भ बन गए। अकबर ने जिस समय गुजरात पर आक्रमण किया था, उस समय रायसल उसके साथ था। [25] अकबर ने प्रसन्न होकर उसे अपना मनसबदार बनाया था तथा उसे खण्डेला तथा रैवासा की जागीरे उपहार में दी।[26] उस समय खण्डेला निर्वाण राजपुतों का तथा रैवासा चंदेलों के अधिकार में था। झाबरमल शर्मा के अनुसार अकबर ने रायसल को हरम व महलों का प्रबन्धक भी नियुक्त किया था। [27]

रायसल शेखावतों का प्रथम व्यक्ति था जिसे अकबर ने राजा की पदवीं प्रदान की थी। नागौर, जूनागढ़, पाटन, भडोंच की महत्वपूर्ण विजयों में रायसल ने अकबर की ओर से भाग लिया। भटनेर के नवाब को उसने कैद किया, गुजरात तथा सिंघ पर विजय प्राप्त की। हल्दी घाटी के युद्ध में वह राजा मानसिंह के साथ था। रायसल के समय से ही उदयपुर तथा खण्डेला शेखावतों की राजधानी रहीं है।

रायसल के 12 पुत्र थे जिनमें से 5 की मृत्यू हो गई शेष 7 पुत्रों में राज्य का विभाजन कर दिया गया। [28] जो इस प्रकार था।[29]

1. गिरधारी जी को खण्डेला और रैवासा।
2. लालसिंह को खाचरियावास।
3. भोजराज जी को उदयपुर।
4. तिरमल जी को कासली (सीकर) के 84 गांव ।
5. परशुराम जी को बवाई।
6. हररामजी को मूंदड़ी।

सातवें पुत्र ताजखानजी को कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ।[30] गिरधर जी के वंशज गिरधरजी कहे गए। गिरधरजी की मृत्यु सैयदों के साथ एक झगडें में हुई। उनकी मृत्यु के बाद द्वारकादास गद्दी पर बैठा। मेव विद्रोह को दबाने में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका रहीं। जहांगीर के शासन काल में खानजहां लोदी के साथ हुए युद्ध में द्वारकादास मारा गया। उसकी मृत्यु के बाद बरसिंह तथा उसके बाद बहादुरसिंह गद्दी पर बैठा, तत्पश्चात केसरीसिंह गद्दी पर बैठा किन्तु दरबार में मतभेद होने के कारण मुस्लिम सेना ने खण्डेले पर अधिकार कर लिया।

रायसल के तीसरे पुत्र विरमल से सीकर ठिकाने की शाखा की शुरूआत हुई। इसने भी अपने पिता के साथ बादशाह की फोजों में युद्ध किया था। प्रसन्न होकर बादशाह ने उसे नागौर तथा कासली के परगने दिए थे। अकबर ने इसे राव की उपाधि भी प्रदान की थी।

18वीं शताब्दी के बाद धीरे धीरे शेखावाटी के प्रशासनिक ढांचे में परिवर्तन हुआ। मुगलों के समय से अधिकांश सरदार मुगलों के मनसबदार थे और बादशाही सेवा के बदले वतन जागीर के अलावा अन्य जागीर तथा वेतन पाते थें।[31] किन्तु 1707 में औरंगजेब की मृत्यु के बाद इस स्थिति में काफी परिवर्तन हुआ। राजस्थान में मराठों व पिण्डारियों ने तेजी से प्रवेश किया जिनका सामना करने की शक्ति न तो स्थानीय सरदारों में थी और न बादशाह में। दक्षिण के युद्धों में व्यस्त होने के कारण मुगलों की उत्तर भारत में स्थिति भी कमजोर हुई। ऐसी स्थिति का लाभ सवाई जयसिंह ने उठाया और अपने जयपुर राज्य का विस्तार किया। उन्होने अनेक जागीरों को इजारे पर लिया तथा आसपास के प्रदेशों पर धीरे धीरे अपनी पकड़ को मजबूत किया। जयसिंह के जीवन काल में आमेर का राज्य 20000 वर्गमील तक फैल चुका था, जिसमें 9000 वर्गमील वतन जागीर शामिल थी।

औरंगजेब की मृत्यु के बाद मनसबदारों के सामने सबसे बडी समस्या थी कि वेतन के रूप में मिली जागीरों से राजस्व कैसे वसूला जाए, क्योकि स्थानीय सरदार राजस्व वसूली में सबसे बडी बाधा थें। जागीरों से राजस्व वसूली इस कारण भी कठिन थी कि मनसबदारों को अपने क्षेत्र से काफी दूरी पर ये जागीरे दी गई थी। ऐसी स्थिति में मनसबदारों ने अपनी जागीरे इजारे पर उठानी शुरू की। जयसिंह ने इजारे पर लेना शुरू किया। 1728 में जयसिंह ने हवेली प्रदेश को छोड़कर सारा अजमेर सूबा इजारे पर ले लिया। उसने अमरसर परगने में भी जागीर प्राप्त की। कुछ समय पश्चात उसके शेखावाटी प्रदेश के बवाई, झुंझुंनू, बावड़ी, उदयपुर, नरहड आदि प्रदेश इजारे से प्राप्त कर लिए। 1732 में उसने एक और साहसिक कदम उठाया उसने उदयपुर के शार्दूलसिंह व सीकर के शिवसिंह की मदद से फतेहपुर कायमखानियों से छीन लिया।[32]

जयसिंह ने इतनी बड़ी संख्या में प्रदेशों पर प्रभाव स्थापित किया कि उन सब प्रदेशों से राजस्व वसूली एक समस्या बन गया अतः उसने अनेक परगने छोटे सरदारों को उप इजारे पर उठा दिये जिनका अधिकार मात्र राजस्व की वसूली करना था। जागीरें प्रायः एक से तीन वर्षों के लिए इजारे पर दी जाती थी।[33]

झुंझुंनू भू–भाग के कुछ प्रदेशों को जिनमें नरहड़ भी शामिल था शार्दुलसिंह ने जयसिंह से इजारे पर ले लिया।[34] सम्भवतः कुछ इतिहासकारों ने इस इजारे को ही विजय मान लिया। वस्तुतः इजारा एक प्रकार का राजस्व वसूली का अधिकार मात्र था।

झुंझुंनू क्षेत्र पर उस समय रूहेला खां मुगल मनसबदार के रूप में कार्यरत था। यहां का कुछ भाग प्रत्यक्ष रूहेला खां के नियन्त्रण में था, कुछ मुस्लिम जागीदारों के पास तथा कुछ प्रत्यक्ष खालसा जमीन थी। अधिकांशतः मुगल जागीदार व मनसबदार जागीदारों व राजस्व कर्मचारियों की मदद से लगान वसूल करने थे किन्तु केन्द्रीय शक्ति के कमजोर होने के कारण इनका राजस्व वसूलना अब मुश्किल हो गया था। ऐसी स्थिति में जागीरे इजारे पर उठाई जाने लगी।

सवाई जयसिंह ने 1726–27 में झुंझुंनू में हस्क्षेप किया तथा इन प्रदेशों को इसी वर्ष अपने उप इजारेदार हरिसिंह, माधोसिंह व शार्दूलसिंह को सौंप दिया।[35]

कर्नल टाड ने शेखावाटी प्रदेश के सिंघाना स्थल को शार्दुलसिंह द्वारा लेने की बात कही है किन्तु श्री मिश्र का यह विचार ज्यादा सही प्रतीत होता है कि सिंघाना खालसा प्रदेश था जिसे जयसिंह ने 1750 में बादशाह से इजारे पर लिया था जिसे 1765 ई0 में शार्दुलसिंह के पुत्रों को इजारे पर दे दिया गया।

उप इजारेदारी का कार्य भी कोई आसान कार्य न था। एक सरदार जो पहले से इस कार्य को करता था आसानी से इजारेदारी छोडता नहीं था। अतः नए इजारेदार को लगान वसूली के लिए संघर्ष करना पड़ता था। हमें इस प्रकार के संघर्षों के वृतान्त यहां के विभिन्न स्त्रोंतों में पढ़ने को मिलते है। शार्दुलसिंह को भी यहां के पूर्व कायमखानी इजारेदारों से संघर्ष करना पड़ा था।

शार्दुलसिंह का नाम जयसिंह की सैनिक सूचि में भी पड़ा जयसिंह के अनेक सैनिक अभियानों में शार्दुलसिंह ने भाग लिया था। शार्दुलसिंह धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति थे। उनकी मृत्यु के बाद उनके अधीन भू–भाग को उनको 5 पुत्रों में बांटा गया इसे पंचपाना कहा गया था। शार्दुलसिंह के बड़े पुत्र जोरावट सिंह ने झुंझुंनू का गढ़ बनवाया। शार्दूलसिंह के एक अन्य पुत्र नवलसिंह ने झुंझुनू से 38 कि0मी0 दूर से रोहिली नामक स्थान पर एक गढ़ बनवाया जिसे नवलगढ़ नाम दिया गया। उसने अनेक युद्धों में भाग लिया था जिनमें बहल, सिहाणी एवं डूंढ प्रमुख है। यही उन्होंने मांडू भाट नामक बस्ती में एक गढ़ बनवाया जिसे मंडावा नाम दिया गया। उन्होनें मांडणस की लडाई में भी भाग लिया था। माडंण का युद्ध जयपुर राज्य व बादशाह के बीच सं0 1832 में लड़ा गया था। जिसमें नवलसिंह का पुत्र लाल सिंह मारा गया था। किन्तु उन्होने शाही फौजों को पीछे हटने को बाध्य कर दिया गया था। सार्दूलसिंह के अन्य पुत्र केशरीसिंह ने डूडलोद का गढ़ बनवाया और विशाला जाट की ढाणी को आबाद करके बिसाऊ नामक गॉव बसाया।

जैसे कि पूर्व में उल्लेखित है कि औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगलों का प्रशासन पूरे देश पर कमजोर होने लगा। शाक्तिशाली सामन्त स्वतंत्र शासन बनने लगें। इस समय छोटे इजारेदार भी बडे इजारेदारों का स्थान ले रहे थे। कर्नल टाड का कहना है कि जयसिंह के समय शेखावत संघ पैतृक रियासत जयपुर से अधिक उच्च व स्वतंत्र था। अब इजारेदार ही शासक बनने का प्रयास करने लगें। उन दिनों शेखावाटी प्रदेश में शार्दुलसिंह व शिवसिंह शक्तिशाली थें। अतः सवाई जयसिंह ने इन दोनों को कायमखानी प्रदेशों का इजारेदार बनाया। अब इन दोनों को इस प्रदेश से प्राप्त खिराज को जयपुराधीश को देना था। इसके अलावा इन इजारेदारों को जयपुर राज्य की सैनिक सहायता भी करनी थी। मराठों के बढ़ते प्रभाव का खतरा जयपुर के साथ–साथ इन इजारेदारों को भी था। अपने अपने प्रदेशों के जमीदारों पर इनका प्रभावपूर्ण नियन्त्रण था।

1818 ई0 में जयपुर के महाराजा जगतसिंह और अग्रंजों के मध्य संधि हुई जिसके द्वारा शेखावाटी के ठिकानों पर जयपुर दरबार का पूर्ण आधिपत्य स्वीकार करते हुये निम्न शर्ते निश्चित हुई। [36]इस संधि पर अंग्रेजी सरकार की ओर से सर चार्ल्स मेटकाफ ने हस्ताक्षर किये।

1. अंग्रेज और जयपुर दोनों एक दुसरें के प्रति मित्रता और एकता बनाये रखेंगे।
2. अगर जयपुर राज्य पर कोई आक्रमण करता है तो अंग्रेजी सरकार जयपुर राज्य की रक्षा करेगी।
3. जयपुर राज्य किसी अन्य राज्य में कोई सम्बन्ध नहीं रखेगी।
4. जयपुर महाराजा किसी पर अत्याचार नहीं करेंगे।
5. जयपुर सरकार अंग्रेजों की मदद से ही किसी राज्य से मेल या संधि करेगें।
6. जयपुर दरबार अंग्रेजी सरकार को दूसरे वर्ष 4 लाख रूपये तीसरे वर्ष 5 लाख रूपये चौथे वर्ष 6 लाख रूपये पांचवे वर्ष 7 लाख रूपये अदा करेगा।
7. जयपुर दरबार आवश्यकता होने पर अंग्रेजों की सैनिक सहायता भी करेगा।
8. दोनों ही शक्तियां एक माह के अन्दर एक दूसरे को कागज सौंप देगें।
9. जयपुर राज्य के दीवानी फौजदारी अधिकारी जयपुर राज्य के पास बने रहेगें।

जयपुर राज्य के अंग्रेजों के साथ 1818 के समझौते के बाद उसके अधीन ठिकानेदार और इजारेदार अपने को शक्तिशाली समझने लगें। 1760 में जयपुर राज्य का उनियारा बागी हो गया, सीकर ने खण्डेला तथा खेतडी ने बवाई पर आक्रमण कर दिया। अब वे नजराने व पेशकश की रकमें जमा करने में आनाकानी करने लगे उन्होने दरबार की सैनिक सेवा में भी कमी कर दी तथा अपने इजारे भी कम करवा लिये[37] 1831 ई0 में कर्नल लोकेट के नेतृत्व में एक सैनिक टुकड़ी

शेखावाटी के ठिकानों में भेजी गई जिसने शेखावाटी का शासन सूत्र बिट्रिश नियन्त्रण में ले लिया।[38] शेखावाटी बिग्रेड के कमाण्डिग अफसर को मजिस्ट्रेट के अधिकार दिये गये। इससे शेखावाटी पर अंग्रेजों का प्रभाव स्थापित हुआ व स्थानीय ठिकानेदारों की स्वतन्त्रता प्रवृति पर अंकुश लगा। किन्तु शेखावाटी प्रदेश के सामन्तों में विद्रोही प्रवृति बराबर विद्यमान रहीं। ठिकानेदारों का विचार था कि हम आन्तरिक मामलों में स्वतंत्र है तथा हमारे द्वारा जयपुर को जो खिराज दिया जाता है वह सिर्फ बधुत्व के नाते ही दिया जाता है। इसके विपरित जयपुर दरबार का मानना था कि शेखावाटी के जागीदार सिर्फ इजारेदार है और उनका इस प्रदेश पर किसी प्रकार का पुश्तेनी अधिकार नही है। धीरे धीरे यह झगड़ा बढ़ता गया तथा अंग्रेजों को इसमें हस्तक्षेप करना पड़ा। विल्स की अध्यक्षता में एक कमेटी बनाई गई। विल्स ने अपनी रिपोर्ट में शेखावाटी के ठिकानेदारों के दावों को नकारते हुए स्पष्ट किया कि यहां के ठिकानेदार कभी यहां काबिज नहीं थें। इस रिपोर्ट का ठिकानेदारों ने डटकर विरोध किया इस तरह यह विवाद लगातार चलता रहा।

किन्तु आगे चलकर शेखावाटी के ठिकानेदारों के प्रति अंग्रेजों की नीति सहानुभूतिपूर्ण बनी रहीं। अंग्रेज नही चाहते थे कि जयपुर राज्य शेखावाटी में प्रभावशाली बने। जनता को वे प्रशासन द्वारा राहत देना चाहते थें। अतः अंग्रेजों ने यहां प्रशासनिक हस्तक्षेप किया। 19 वीं शताब्दी में मालगुजारी सम्बन्धी सुधार किए। सामाजिक क्षेत्र में सतीप्रथा को समाप्त करने के परिवर्तनों को शुरू किया गया। सीकर, खेतड़ी जैसे बडे ठिकानों में स्कुल खोले गए जहां आधुनिक शिक्षा प्रणाली को शुरू किया गया। इस अवधि में रेल, डाक, तार, विभाग ने ठिकानों की प्रशासनिक व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ बनाया। उसका श्रेय निश्चित रूप से अंग्रेजी सरकार व उसके अधिकारियों को था।

संदर्भ ग्रन्थ

1. राजस्थान का इतिहास, गोपीनाथ शर्मा, शिवपाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी आगरा पृष्ठ1
2. राजस्थान का इतिहास, गोपीनाथ शर्मा, शिवपाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी आगरा पृष्ठ1
3. राजस्थान का इतिहास, गोपीनाथ शर्मा, शिवपाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी आगरापृष्ठ2
4. जयपुर राज्य का भूगोल, अनन्तरालाल मुखर्जी, पृष्ठ 17
5. शेखावाटी का इतिहास, रतनलाल मिश्र 1984, पृष्ठ 24
6. अनलस एण्ड एण्टीक्वीटीज ऑफ राजस्थान, पृष्ठ 138
7. मत्स्य देश का इतिहास, पाण्डुलिपि, मधुसूदन ओझा।
8. शेखावाटी प्रकाश, रामचन्द्र शास्त्री, पृष्ठ 4
9. श्री शार्दुलसिंह शेखावत, मण्डावा देवीसिंह, पृष्ठ 8
10. श्री शार्दुलसिंह शेखावत, मण्डावा देवीसिंह, पृष्ठ 8
11. टाड़, राजस्थान, भाग– 2 690–97
12. बख्सी, झूंथालाल, माधवंश प्रकाश (हस्तलिखित) पृष्ठ55
13. जोशी, निरंजन, बिसाऊ का इतिहास (हस्तलिखित) पृष्ठ45
14. शास्त्री रामचन्द्र,शेखावाटी प्रकाश अध्याय 5, पृष्ठ 9
15. शर्मा, झाबरमल, सीकर का इतिहास पृष्ठ 13
16. शास्त्री रामचन्द्र, शेखावाटी प्रकाश, भाग–प्रथम अध्याय 5 पृष्ठ 4
17. बख्शी, झुंथालाल, माधवंश प्रकाश (हस्तलिखित) पृष्ठ78
18. मिश्र रतनलाल, शेखावाटी का इतिहास, पृष्ठ 146
19. मिश्र, रतनलाल, शेखावाटी का इतिहास पृष्ठ 157

20. केसरी सिंह पृष्ठ 25–26 पद्य 98–103
21. मिश्र रतनलाल, शेखावाटी का इतिहास, पृष्ठ 150
22. मिश्र रतनलाल, शेखावाटी का इतिहास पृष्ठ 150
23. शास्त्री हरप्रसाद रिपोर्ट ऑन दि आपरेशन इन सर्च आफ मैन्यू आफ वारडिक क्रोनिकल
24. आइने अकबरी, पृष्ठ 418
25. बलौचन आइने अकबरी, पृष्ठ 418
26. मिश्र, रतनलाल शेखावाटी का इतिहास पृष्ठ 151
27. शर्मा, झाबरमल, केसरीसिंह समर,पृष्ठ 20
28. सिंह हरनाथ, शेखावतों की वंशावली, पृष्ठ 11
29. कर्नल टाडकृत राजस्थान का पुरातत्व एवं इतिहास, तृतीय खण्ड रास्थानी ग्रन्थागार जोधपुर, पृष्ठ 105
30. शर्मा, झाबरमल सीकर का इतिहास, पृष्ठ 27–28
31. मिश्र, रतनलाल, शेखावाटी का इतिहास पृष्ठ 182
32. मिश्र, रतनलाल, शेखावाटी का इतिहास पृष्ठ 163
33. मिश्र, रतनलाल, शेखावाटी का इतिहास 164
34. मिश्र, रतनलाल, शेखावाटी का इतिहास, पृष्ठ 185
35. मिश्र, रतनलाल शेखावाटी का इतिहास, पृष्ठ 185
36. आर्य, हरफूलसिंह शेखावाटी के ठिकानों का इतिहास एवं योगदान, पृष्ठ 112
37. ब्रुक जे.सी. जोसिटिकल हिस्ट्री ऑफ जयपुर।
38. टॉड , राजस्थान, भाग 3 पृष्ठ 1399